Haryana Government Gazette

Published by Authority

© Government of Haryana

No. 42–2024] CHANDIGARH, TUESDAY, OCTOBER 15, 2024 (ASVINA 23, 1946 SAKA)

PART-I

Notifications, Orders and Declarations by Haryana Government

हरियाणा सरकार

विरासत तथा पर्यटन विभाग

अधिसूचना

दिनांक 11 अक्तूबर, 2024

संख्या 12/250 पृथ्वीराज की कचेहरी तोशाम/2024/पुरा/3489–96.— चूंकि, हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि नीचे दी गई अनुसूची के खाना 1 में विनिर्दिष्ट पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों तथा प्राचीन और ऐतिहासिक संस्मारकों का हरियाणा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1964 (1964 का पंजाब अधिनियम 20) के अधीन संरक्षण अपेक्षित है;

इसलिए, अब, हरियाणा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1964 (1964 का पंजाब अधिनियम 20) की धारा 4 की उपधारा (1) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल, इसके द्वारा, नीचे दी गई अनुसूची के खाना 1 में विनिर्दिष्ट प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारकों को संरक्षित संस्मारक के रूप में तथा उक्त अनुसूची के खाना 2, 3, 4, 5, 6 तथा 7 में विनिर्दिष्ट पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों को संरक्षित क्षेत्र के रूप में घोषित करने का प्रस्ताव करते हैं।

इसके द्वारा, नोटिस दिया जाता है कि इस अधिसूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तिथि से दो मास की अवधि की समाप्ति पर या उसके पश्चात् सरकार, ऐसे आक्षेपों या सुझावों, यदि कोई हो, के साथ जो प्रधान सचिव, हरियाणा सरकार, विरासत तथा पर्यटन विभाग, चण्डीगढ़ द्वारा प्रस्ताव के सम्बन्ध में किसी व्यक्ति से इस प्रकार विनिर्दिष्ट अवधि की समाप्ति से पूर्व प्राप्त किए जाए, पर विचार करेगी।

अनुसूची

प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक का नाम	पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेष का नाम	गांव/शहर का नाम	तहसील/जिला का नाम	संरक्षणाधीन राजस्व खसरा/किला संख्या	संरक्षित किया जाने वाला क्षेत्र कनाल–मरला	स्वामित्व	विशेष कथन
1	2	3	4	5	6	7	8
पृथ्वीराज की कचहरी तोशाम, 14 वीं शताब्दी	पृथ्वीराज की कचहरी तोशाम, 14वीं शताब्दी	तोशाम	भिवानी	388/1/2/1	34–19	ग्राम पंचायत	हांसी से लगभग 35 किलोमीटर दक्षिण–पश्चिम में स्थित तोशाम एक छोटा सा कस्बा है। यह कस्बा एक बड़ी शंक्वाकार चट्टान की पूर्व तलहटी पर स्थित है। इस छोटी चट्टान के शिखर पर एक सलीबाकार मेहराबदार स्मारक है जिसे बारादरी कहा जाता है, स्थानीय रूप से पृथ्वीराज की कचहरी के नाम से जाना जाता है। 'बारादरी' (बारह दरवाजे हालांकि वास्तव में इस स्मारक में सोलह दरवाजे है) संरचना के चारों ओर मेहराबदार द्वारों की संख्या को संदर्भित करता है। यह इमारत एक ऊंचे मंच पर निर्मित है, इसके निर्माण के लिए पत्थर के बड़े खण्ड़ों का इस्तेमाल किया गया है। चूने से पुती हुई बारादरी पत्थर पर बनी हुई है।

प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक का नाम	पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेष का नाम	गांव/शहर का नाम	तहसील/जिला का नाम	संरक्षणाधीन राजस्व खसरा/किला संख्या	संरक्षित किया जाने वाला क्षेत्र कनाल–मरला	स्वामित्व	विशेष कथन
1	2	3	4	5	6	7	8
							इसकी विशाल टूटी–फूटी दीवारें है। किले की ईमारत एक सलीबाकार वास्तु नक्शे पर आधारित है, जिसका प्रत्येक पंख 5 मीटर ऊंचा है और गुम्बद से आवृत केंद्रीय भवन से 3 मीटर बाहर निकलता है। बाहर की ओर से इसमें बारह मेहराबदार दरवाजे है, जो चार गुम्बददार कक्षों में खुलते है। ये चारों कक्ष एक दरवाजे द्वारा केंद्रीय गुम्बददार कक्ष से जुड़े है। समान आकार के ये पांचो कक्ष औसतन 2.3 मीटर वर्ग आकार के हैं। केंद्रीय कक्ष के कोने एक अष्टकोण बनाते है, जिस पर अपेक्षाकृत ऊंचे ढोलाकार आधार से उठने वाले एक अर्धगोलाकार गुम्बद का संक्रमण क्षेत्र टिका हुआ है। कोने की सिल्लियों के नीचे, दीवारों में छोटे तिरछे कोष्ठ छिद्रित किए गए है, जो बाहरी दीवारों के आंतरिक कोणों के उच्चतम बिंदु तक जाते है। गुम्बद के ढोलाकार आधार के चारों ओर भी कई कोष्ठ है। गुम्बद जिस तरीके से निर्मित है, साफ दर्शाता है कि केंद्रीय कक्ष को हवादार बनाना प्राथमिक उद्देश्य था। चारों बाहरी कक्षों में क्रॉस वॉल्टर है तथा उनकी समतल छतें हैं, जिस कारण केंद्रीय गुंबद सभी दिशाओं से दिखाई देता हैं वास्तुशिल्प की विशेषताओं के आधार पर, यह तुगलक काल की संरचना हो सकती है।

कला रामचंद्रन,
प्रधान सचिव, हरियाणा सरकार,
विरासत तथा पर्यटन विभाग।

HARYANA GOVERNMENT

HERITAGE AND TOURISM DEPARTMENT

Notification

The 11th October, 2024

No. 12/250- Prithviraj ki Kachheri, Tosham/2024/pura/3489-96.— Whereas the Governor of Haryana is of the opinion that archaeological sites and remains and ancient and historical monuments specified in column 1 of the Schedule given below requires protection under the Haryana Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1964 (Punjab Act 20 of 1964);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred under sub-section (1) of section 4 of the Haryana Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1964 (Punjab Act 20 of 1964), the Governor of Haryana hereby proposes to declare the ancient and historical monuments specified in column 1 of the Schedule given below, to be protected archaeological sites and remains specified in columns 2, 3, 4, 5, 6 and 7 of the said Schedule to be protected area.

Notice is hereby given that the proposal shall be taken into consideration by the Government on or after the expiry of a period of two months from the date of publication of this notification in the Official Gazette, together with objections or suggestions, if any, which may be received by the Principal Secretary to Government, Haryana, Heritage and Tourism Department, Chandigarh from any person with respect to the proposal before the expiry of the period so specified: -

SCHEDULE

Name of ancient and historical monuments	Name of archaeological sites and remains	Name of village/ city	Name of tehsil / district.	Revenue Khasra/ Kila number under protection.	Area to be protected Kanal-Marla	Ownership	Remarks
1	2	3	4	5	6	7	8
Prithviraj ki Kachheri, Tosham, 14th Century	Prithviraj ki Kachheri, Tosham, 14th Century	Tosham	Bhiwani	388/1/2/1	34-19	Gram Panchayat	Tosham is a small town, about 35 kilometers south-west of Hansi. The town is situated at the eastern foot of a huge conical rock. On top of this small rock is a cruciform arched

Name of ancient and historical monuments	Name of archaeological sites and remains	Name of village/ city	Name of tehsil / district.	Revenue Khasra/ Kila number under protection.	Area to be protected Kanal-Marla	Ownership	Remarks
1	2	3	4	5	6	7	8
							monument known as Baradari, locally known as Prithvi-Raj ka Kachheri. The baradari (twelve doors, though in reality it possesses sixteen openings) refers simply to the number of arched openings around the structure. The building stands on a high platform, which is constructed with large blocks of stone. This lime plastered baradari is build on stone. It has massive battered walls. The plan of the citadel is a cross. Each wing is 5 m high and projects over 3 m from the central building, which is covered by a dome. It has twelve arched doorways from the outside; leading into four vaulted chambers and connected by doorway to a central domed chamber. All the five chambers are similar in size and easure 2.3 m square on average. The corners of the central chamber form an octagon supporting the transitional zone of a hemispherical dome rising from a relatively high drum. Below the corner slabs the wall are pierced by small sloping openings leading to the highest point of the inner angles of the exterior walls. There are also a number of openings round the drum of the dome. The dome itself, showing that ventilation of the central room was a primary concern. The four outer chambers have cross vaults and their roofs are flat, making the central dome visible from all directions. As per features of the architecture, it may pertain to Tughlaq period.

KALA RAMACHANDRAN,
Principal Secretary to Government, Haryana,
Heritage and Tourism Department.

11321—C.S.—H.G.P., Pkl.